नाम रूप लीला धाम

ओम तत्सदात्मने नमः

'व्यापक एक ब्रह्म अविनासी। सत चेतन धन आंनद रासी।।

अस प्रभु हृदय अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी।।'

आनंद घन परमात्मा सबके अन्दर है, फिर भी दीन हीन और दुखी है आदमी। क्योंकि उसको भुला दिया है। अगर उस आत्मस्वरूप को पा जाय तो सारी परेशानी हल हो जाय। अब वह पकड़ में कैसे आये? उपाय है कि,

नाम निरूपण नाम जतन ते। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन ते।।

नाम का यजन किया जाय तो वह परमात्मा प्रत्यक्ष हो जायगा। नाम से नामी का पता लग जायेगा। इस तरह से नाम की महिमा बहुत बडी है।

'कहउं कहा लगि नाम बडाई। राम न सकहिं नाम गुन गाई।।

नाम से बड़ा कोई नहीं है। गोस्वामी जी कहते हैं–

ब्रह्म राम ते नाम बड़, वरदायक वरदानि।

ब्रह्म निर्गुण और सगुण दोनो से बड़ी नाम की महिमा होती है। इसलिए नाम जप खूब करना चाहिए। लेकिन पहले नाम जप का सही तरीका समझना पड़ेगा। एक तो राम राम, शिव शिव, ओम ओम यह वाणी से जपा जाता है। जिसको जिसमें रूचि होती है वही उसके लिए ठीक नाम है। तो यह जो बोलकर नाम जपते हैं इसे बैखरी वाणी का जप कहते हैं। अनेक विधियां हैं नाम जपने की। बैखरी, मध्यमा, पश्यंती और परा ये चार वाणियां हैं। इन वाणियों से नाम जप होता है। लेकिन इनका प्रभाव अलग अलग है। कहा गया है कि,

राम नाम में अन्तर है। कहीं हीरा कहीं पत्थर है।।

अब समझो कि कहीं हीरा और कहीं पत्थर यह कैसे होता है। तो देखो हमारी तुम्हारी सभी की रुचि भगवान का नाम लेने में रहती है। सभी चाह रखते हैं मुक्ति शांति पाने के लिए। कौन ऐसा है जो नहीं चाहता ईश्वर को? नाम जपने का अर्थ होता है मन की गति को रोकना। क्योंकि,

मन ऐव मनुष्याणाम् कारणम् बन्धमोक्षयोः।

मनुष्य का मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है। अगर मन रुक जाय तो मुक्ति का मार्ग खुल जाताहै। किसी ने कहा है,

नुक्ता ऊपर नुक्ता नीचे नुक्ता आता जाता है।

एक नुक्ते के हेर फेर से खुदा जुदा हो जाता है।।

और एक नुक्ते के हेर फेर से खुद ही खुदा हो जाता है। यह हमारा मन ही नुक्ता है। और इसी नुक्ते के हेर फेर से खुद ही खुदा हो जाता है। अगर यह मन ईश्वर में लगा तो वह रंग चढा और माया में लगा तो वह रंग चढा। अब समझ में आ गया होगा कि मन का क्या काम है? तो मन का काम है कि माया में लगा रहेगा तो तुम्हें नरक में ले जायगा। और ईश्वर के नाम रूप में लग जायेगा तो मुक्ति देगा। इसलिए मन से भगवान का नाम लिया जाता है, मन को रोकने के लिए। माया में जाने से मन को रोकने के लिए।

यह मन इतना बारीक है कि जब बैखरी वाणी से राम राम जपते रहते हैं तो यह मन चुपके से निकलकर तमाम दूसरे विषयों का चिंतन करता रहता है। और इस तरह मन के योग के बिना बैखरी वाणी से नाम का यह सुमिरन व्यर्थ हो जाता है। कबीर कहते हैं,

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।

मनुआ तो चहुं दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।

तो इस तरह से यह बैखरी वाणी से लिया गया नाम पत्थर नाम हो जाता है। इस नाम की वैसी कीमत नहीं होती। और बैखरी के आगे मध्यमा वाणी है,जिसमें होंठ जीभ हिलें, लेकिन आवाज नहीं निकले। इसे मध्यमा वाणी कहते हैं। इससे जो नाम लिया जाता है,वह थोड़ा सा ज्यादा अच्छा माना जाता है, मन को कंट्रोल करने के लिए। लेकिन इससे भी आगे एक वाणी और है, जिसको पश्यंती वाणी कहते हैं। जो हृदय से निकलती है। जिसमें चिंतवन से नाम लिया जाता है। जिसको तुम सुमिरन कहते हो, चिंतवन कहते हो, स्मरण कहते हो। उससे जब नाम जपा जाता है तो मन को ही जपना पडता है। तो अब कहां भागेगा और यदि मन कहीं भाग कर जायगा तो जाप बंद हो जायगा और हमें पता लग जायगा कि मेरा मन भाग चुका है। तो हम फिर से अपने मन को पकड लेंगे। इस तरह वह वाणी, जो नाम को सही रूप में लेबल करती है, उसको कहते हैं पश्यंती वाणी। उससे भी सूक्ष्म है परावाणी। यह वाणी नाभि से निकलती है और हर श्वासा में चलती है।

निरंजन माला घट में फिरै दिन रात।

नीचे आवे ऊपर जावे श्वांस श्वांस चलि जात।।

यह निरंजन माला श्वांसा की माला है, इसमें निरंतर जप होता है।

मन मूरख सोवै महा चेतन को नहि चैन।

मन तो विषय रूपी नींद में सो रहा है लेकिन श्वासा कभी बंद नहीं होती। खाते पीते, बोलते कुछ भी काम करते रहते हैं और श्वासा चलती रहती है। ऊपर जाती है तो रा, नीचे जाती है तो म यह नामजपती रहती है। इसलिए जो महात्मा साधना में आगे बढ जाते हैं, वे इसी वाणी से, श्वासा से नाम जपते हैं। जैसे बाल्मीकि ने उल्टा नाम जपा था। तो उल्टा का मतलब बाहर के बजाय अन्दर अजपा जप से है। लेकिन इसकी एडजेस्टिगं सामान्य लोगों को ठीक नहीं बैठती। इसलिए समझने वाले ही इसे समझते हैं। उल्टा नाम का आशय अजपा जाप से है। वह हीरा नाम है। उसकी कीमत बहुत ज्यादा होती है। हम यह नहीं कहना चाहते हैं कि यह नाम केवल अध्यात्म का विषय है या केवल महात्माओं के लिए है। वस्तुतः यह राम नाम जन जन के कल्याण का विषय है। देखिये हर आदमी बैखरी वाणी के जप से शुरू करके आगे बढ़ सकता है, अगर उसमें लगन हो, अनुराग हो और निरंतर अभ्यास में लगा रहे।

एक आदमी अगर पांच करोड राम नाम बैखरी वाणी से जप लेता है तो उसका अनहद द्वार खुल जाता है। उसे अंतर्जगत में प्रवेश करने की कुंजी मिल जाती है। अगर मध्यमा से एक करोड नाम जप कर ले तो यह काम हो जाता है। पश्यंती से पचास लाख में और परा वाणी से हजारों में ही अनहद द्वार खुल जाता है। इतना महत्वपूर्ण है यह नाम जप। अनहद द्वार खुलने का मतलब यह है कि अतंर्जगत मे अनेक इंद्रियां, अनेक भावनाएं जो हैं,उन पर कंट्रोल करने की क्षमता आ जाती है व्यक्ति में। इसलिए सबको व्यक्तिगत रूप से नाम जपमें लगना चाहिए। जो भी व्यक्ति ऐसा कर लेता है और अपने अंतर्जगत में प्रवेश पा लेता है तो आत्मा उसका गाइड बन जाता है। उसकी इंद्रियां अनुकूल बन जाती हैं। इस प्रकार जब वह अंतःकरण में नियंत्रण कर लेता है,तो बाहर भी उसकी क्रियाएं कल्याणकारी होती हैं। उसके ब्रेन में, मन में इनर्जी आ जायेगी और उसके कहने का असर लोगों पर होगा। लोग उसकी बात को मानेंगे। और अगर ऐसा नहीं करते तो कोई कुछ नहीं मानता। इसलिए समाज में काम करने वालों को भी नाम जप करके ऐसी क्षमता प्राप्त करना चाहिए।

लीडर वही है जो अपने आत्मा के द्वारा अपनी इंद्रियो को लीड कर ले, नियंत्रित कर ले। वही नेता है। ऐसा जो नेता होगा वह समाज का देश का हित कर सकता है। समाज को सही दिशा दे सकता है। जन जन का कल्याण कर सकता है।

इसलिए नाम जप में वह क्षमता है कि वह एक व्यक्ति का ही नहीं पूरे समूह का कल्याण कर सकता है। कहते हैं कि

भाव कुभाव अनख आलसहू। नाम जपत मंगल दिस दसहू।।

इसलिए बिना किसी को जनाये अपने मन में नाम का यजन करें। क्योंकि नाम का जप एक शुभ कार्य है। और शुभ कार्य को यहां वहां बताते रहने से उसका पुण्य बंट जाता है। इसलिए चुप चाप प्रसुप्तरूप से बिना किसी को बताए, नाम जप में लगे रहना चाहिए। तब इसका सुफल प्राप्त होता है। नाम जप और ध्यान मन को नियंत्रित करने के लिए करते हैं। मन के अन्दर बहुत बड़ी ताकत है।

हमारे ऋषियों मुनियों ने इसे समझा था और वह क्षमता प्राप्त की थी। एक ऋषि अगर किसी को शाप दे देता था तो एक ही शब्द में बड़े से बड़े ताकतवर दुष्ट को, एक क्षण में भस्म कर देता था। कहां उसके पास अस्त्र शस्त्र और गोली बंदूक थी? उसमें क्षमता थी और उसके संकल्प मात्र से कुछ भी हो सकता था। इस क्षमता से वह नीच से नीच को भी अपने आशीर्वाद से ऊपर उठा देता था। यह क्षमता उसे कहां से मिलती थी। यह उस एटम की क्षमता है जिसका अनुसंधान अपने अंतःकरण में उसने करलिया था। यही हमारे तुम्हारे सबके पास है, हर एक के पास है। इसका सदुपयोग करना मात्र है। ध्याता, ध्यान और ध्येय ये तीनों हैं हम सबके अन्दर। उनमें जो तादात्म्य लाता है, ध्याता ध्यान और ध्येय को मिलाता है वह सफल होता है। यह त्रिपुटी है। यही इलेक्ट्रान, न्यूट्रान और प्रोट्रोन हैं। अगर इन्हें रोक दिया जाय, ध्याता ध्यान और ध्येय एक हो जायं, इनमें एकतानता आ जाय और वह एक रस बनी रहे तो फिर वह क्षमता आती है। ईश्वर ने हर मनुष्य के अन्दर वह ताकत दी है। लेकिन दिन रात विषय चिंतन में उसे बरबाद किया जाता है। उस ताकत को रिजर्व करने के लिए जप और ध्यान की क्रियायें हैं।

जब तक हृदय में जप ध्यान नहीं किया जायेगा, मन की गति को नहीं रोका जायगा, तब तक वह इनर्जी रिजर्व नहीं हो सकती। अगर इनर्जी रिजर्व हो जायगी तो उससे वीटो और विल पावर मिल जायेगा। फिर उससे कुछ भी काम लिया जा सकता है।

तो यह पश्यंती वाणी का जप हर प्रकार से उत्तम है, सुविधा जनक है मन को एकाग्र करने के लिए बहुत अच्छा है। इस श्वास जप को महात्माओं ने बहुत महत्व दिया है। निरंतर जप के लिए यह श्वास की निरंजन माला भगवान ने हमें तुम्हें

सबको दे दिया है। इसी में मन को लगा दो, जप हो रहा है, मन खड़ा होकर सुनता रहे। यही मन की माला है। कबीर कहते हैं कि,

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।

कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ।।

तो इस मन की माला को ले लेना चाहिए। इससे कल्याण का रास्ता सुगम हो जाता है। इसमें कोई झंझट भी नहीं है। और अगर बाहर की माला जपना है, तो माला की जरूरत होगी। तो फिर बाजार जाओ, पैसे की व्यवस्था करो, माला खरीदो। या फिर तुलसी का पेड़ काटकर माला बनाओ, तब जपो। पूजा करना है तो अगरबत्ती, भोग, घी, धूप यह सब सामग्री जुटानी पड़ेगी। तो एक तरफ तो मन को शांति चाहिए, इच्छा रहित होना चाहिए, उधर भजन पूजन का सामान भी चाहिए। उसके लिए मांगना पड़ेगा, व्यवस्था में लगना पड़ेगा। तो फिर साधक को चिंतवन करना पड़ेगा उसके लिए। और भजन का मतलब है कि मन इधर उधर पदार्थो में न जाय।

तो फिर महात्मा लोगों ने युक्ति बतायी, कि यह श्वासा की माला जपो। मन के मन्दिर में भगवान की पूजा करो। तो बाहरी किसी चीज की, माला धूप दीप की जरूरत नहीं रहेगी। इस तरह साधकों को इसमें बड़ी सहूलियत हो गयी। तो जब कोई अनुरागी साधक इसे पा लेता है तो प्रसन्नता से भर जाता है। यह श्वांसा की माला जपना नहीं पड़ता। यह अपने से ही नाम जपती रहती है। मन को इसमें लगा दें, बस सुनता रहे। यह जप साधक को बड़ी जल्दी लक्ष्य की ओर ले जाता है।

यह बैखरी वाणी स्थूल के लिए है, मध्यमा भी स्थूल के लिये है। पश्यंती जो है सूक्ष्म के लिए है यह श्वास जप। और जो अजपा है, यह कारण के लिए है। अजपा में आटोमैटिक क्रिया आती है–अजपा जपा नहीं जाता है। जपती है श्वास, तुम उसे देखो, देखते चलो। और अजपा उसको कहते हैं, जब देखना भी बंद हो जाय। भारी महावड़ा हो जाता है, जब साधक को। जपो न, जप हो रहा है। सो रहा है औरजप हो रहा है। खा रहा है और जप हो रहा है। जब यह क्रिया होती है, तो वह अजपा है। और जो मन को खड़ा कर दिया, और देख रहा है श्वासा को, क्या कह रही है। इसको पश्यंती कहते हैं। इसको देखते–देखते जब हम लीन हो जायं, धीरे–धीरे लीन हो जायं। तो फिर इसके आभ्यास से, आटोमैटिक क्रिया शुरू होती है। जब आटोमैटिक क्रिया होगी तो उसको अजपा कहते हैं।

चाहे तुम सोओ, चाहे जागो, चाहे रोओ, चाहे हंसो–श्वासा अपना काम करती है। इतनी अच्छी रफ्तार की चीज़, हमारे मन को एकाग्र करने वाली चीज़, हमको धरे–धराए मिली हुई है। इसमें महात्मा लोग बहुत संतुष्ट हुए, कि यह अच्छी बनी–बनाई माला हमें भगवान ने दे दी–आटोमैटिक माला दे दी। लेकिन यह पहले समझ में नहीं आती। क्योंकि यह हाई–लेबल की–ऊपर के स्तर की शिक्षा है। यह बहुत आगे की समझ है, साधना है, जाप है। पहले तो बाहर की माला जपना पड़ेगा। फिर मन की माला जपना पड़ेगा और जब मन की माला समझ में आ जायगी तब यह श्वासा की माला मिल जाती है। सबको एडजस्टिंग इसमें नहीं होती। कितना भी समझा जाय, जल्दी समझ में नहीं आती। साधक को श्वासा का जाप करना चाहिए–यह महत्वपूर्ण है। अपने मन को खड़ा कर दो–जपे न। यह न कहे रा–म। यह जप नहीं सकता। यह अजप है। जपा नहीं जा सकता। अगर जपेगा। तो राम, राम, ओम, ओम, यह है बैखरी में। और अजप, जप का अपोजिट–उल्टा। यह जपा नहीं जाता। यह तो जपने वाला जप रहा है। यह तो अजप है, अनहद है, आटोमैटिक है। उसको तुम–मन को खड़ा करके सुनो। यह अजपा है। उसको जपा नहीं जाता। वह तो कन्टीनिवस (लगातार) हो रहा है। वह तुम्हारे जपने से नहीं होगा। उसको खाली सुना जाता है। उसे तुम खड़े होकर सुनो। तो सुनते–सुनते यह मन रूपी मृग, वाणी रुपी वीणा को सुनते–सुनते पकड़ में आ जायेगा। जैसे कहानी में तुमने सुना होगा कि कोई बहेलिया वीणा बजा रहा था तो मृग आ जाता था। तो वह मृग नहीं–मृग क्यों आएगा? उसको वीणा की तान से क्या मतलब? यह तो लोगों की अज्ञानता है। यह तो महात्मा लोगों की बनाई हुई कहानी है। मृग मन को कहा होगा, किसी महापुरुष ने आवेश में आकर। और जंगल इस संसार को कह गया होगा। और अगर यह अजपा जाप की वाणी रूपी वीणा बन जाय, किसी साधक के हृदय में, तो यह मन रूपी मृग, संसार रूपी इस जंगल से निकल जायेगा और कल्याण हो जायेगा। ऐसी–ऐसी कहानियां बन जाती हैं, और फिर समाज में प्रचलन होता रहता है। जो सही चीज़ है, जो आधार है उसमें जब पहुंचे आदमी, तब उसका पता चल जाता है। जब तक स्वयं अपने आपको प्रतीति नहीं लग जाती, जब तक हम आँख से नहीं देख लेते, तब तक कैसे मान लेना चाहिए? यह विषय तो प्रैक्टिकल है।

तो अजपा जाप जब एडजस्ट हो जाता है, तब फिर मेडिटेशन (ध्यान) हो जायेगा। मेडिटेशन बहुत कठिन चीज़ है–सबसे कठिन चीज़ है। जितना बताने में सरल लगता है, उतना ही करने में कठिन है–अपार कठिन है। तो इस तरीके से मेडिटेशन का

तरीका अजपा है–नाम है। नाम के कई टाइप या भेद होते हैं। बैखरी का होता है–बैखरी का जप करते–करते जब उसका कर्जा चुक जायेगा, तो अपने आप बैखरी वाणी, मध्यमा को रिपोर्ट दे देगी। और मध्यमा में अपने आप एडजस्टिंग हो जायेगी। किसी को बताने की भी ज़रूरत नहीं है, किसी से पूछने की भी ज़रूरत नहीं है। फिर मध्यमा में जपते–जपते जब हमारी एडजस्टिंग पश्यंती में पहुंचती है, तो फिर यह मध्यमा पश्यंती को रिपोर्ट दे देगी। और पश्यंतीमें तब तक जपना है, जब परा हमको अपने आप स्वीकार कर ले, और यह पश्यंती हमें परा में ढकेल दे। ऐसा नियम है–एक से दूसरे स्टेज में पहुंचने का। परा में जब पहुंच जाते हैं, तो फिर ध्यान में ठीक रहता है। परा वाणी का जो नाम होता है–वह बहुत महत्वपूर्ण होता है।

अगर जाप का प्रेशर (दबाव) बढ़ गया, तो वेट (वजन) बनेगा। और अगर प्रेशर नहीं बना पाओगे, तो हल्का रहेगा। हल्का होने से, पलड़ा उठ जायगा। विजातीय तत्व, उसको इधर–उधर कर देंगे। इसलिए इतना ज़्यादा जाप करना चाहिए, इतना ज़्यादा करना चाहिए, कि करते–करते प्रेशर आ जाय, वेट आ जाय। तो जब इतना ज़्यादा वजन आएगा, तो वो उखाड़ नहीं पाएंगे और हल्का रहेगा, तो हिला देगा, उखाड़ देगा। इसलिए निरंतर भजन में लगे रहना चाहिए, और इतना ज़्यादा जाप करने की आदत डालना चाहिए, कि जब हम चाहें मन को रोक लें। साधक को ऐसी आदत डाल लेनी चाहिए, कि जब चाहें, जहाँ चाहें–खाते–पीते, बैठते–उठते, हम अपने ध्यान में चले जायं। जब ऐसी स्थिति बन जाती है, तो वह साधक बहुत अच्छी स्थिति वाला होगा। और मन रुक नहीं पा रहा है। अभ्यास करता है–मन रुकता नहीं है, तो उसका प्रेशर बन कर तैयार नहीं होगा। इसलिए अभ्यास बहुत होना चाहिए। गीता में कहा गया है कि यह मन अभ्यास से पकड़ में आता है –अभ्यासेन तु कौंतेय। इतना अधिक अभ्यास होना चाहिए, कि पूर्ण अभ्यास आना चाहिए। तब फिर भजन के प्रेशर से, ध्यान आएगा। ध्यान के लिए, शुरू में साधक को बता दिया जाता है, कि भगवान की मूर्ति देखो। कैसा ललाट है, कैसा मुख है। यह भी ध्यान ही है। इसके बाद उसे अन्दर ले जाता है। मणिपूर में देखता है, अनाहत में हृदय में, त्रिकुटी में। यह स्थितियों के अनुसार आगे होता जाता है। पहले स्थूल का ध्यान, मूर्ति आदि का होता है। फिर सूक्ष्म का अन्तःकरण में होता है। फिर कारण का, अजपा आदि की कोटि में आता है। इस तरीके से ध्यान, चार स्तर का होता है। ऐसे ही जाप चार स्तर का होता है। और जब ऊंचे स्तर में, अजपा में पहुँच जाता है जप, तब साधक तुर्या में पहुँच जाता है–छठवीं भूमिका में पहुंच जाता है। पदार्थ अभावनी, इस भूमका से लेबल करता है।

श्वास जप नहीं बनता, तो बैखरी से जपो। यह ऊपर का कोर्स पूरा हो जाय, तो आगे का होगा। जैसे पहली कक्षा का कोर्स हो जाय, तो दूसरी। दूसरी का हो जाय, तो तीसरी। तीसरी का हो जाय, तो चौथी। चौथी का हो जाय, तो पांचवी। इसी तरह से साधना का क्रम है। अगर पश्यंती में नहीं हो पाता तो बैखरी में जपो। जब बैखरी का कोर्स पूरा हो जाय, तो मध्यमा से जपो। जब मध्यमा का कोर्स पूरा हो जायगा, तो श्वासा में आ जायगा। यह है–इसका तरीका। जब इसको सही रूप में समझे। प्रैक्टिकल में समझें, थ्योरिटिकल में समझें। और जब समझ में आ जाय, तब करें। पहले बैखरी जप करो। दो चार महीने करने के बाद, मध्यमा में आ जायगा। फिर श्वासा में आ जायगा, फिर आटोमैटिक हो जायगा। जैसे हम खाते हैं, पीते हैं, चलते हैं, बोलते हैं, झगड़ा करते हैं, हँसते हैं, क्या श्वासा कभी बंद होती है? श्वास ऊपर जाती है नीचे आती है–निरंतर। ऐसे ही निरंतर, हम भगवान की शरण में रहें।

ऐसे नाम जपने में, अन्तर आ जाता है– राम, राम राम। लेकिन निरंतर जप यह कैसे हो? तो ऐसी कौन चीज़ है, जो निरंतर चलती है–तो वह है श्वासा। श्वासा निरंतर चलती है। इसलिए श्वासा का जप, निरंतर चलता रहता है। रा..... म, रा.... म। ऊपर जाती है तो रा, नीचे जाती है तो म। बस श्वासा मेंनाम चलने दो, और मन को खड़ा कर दो। सुनता रहे। मन है मृगा। वाणी है वीणा। सुनते सुनते जहां मन फंसा, तो यह मन मर जायगा। मर जाने दो। मन उसमें समा जाने दो। चाहे सूखा कहो, चाहे मरना कहो, चाहे समाना कहो–एक ही बात है। साधक की यह जिम्मेदारी है। और फिर चेतन का प्रतिबिम्ब खड़ा करके, उससे बात हो जाय। यह बात करे उससे, और वह बात करे इससे। वह इसे स्वीकार कर ले। और यह अपने को सुनाई पड़े, कि हमारी भगवान से बात हो गई। बस काम खतम।

न जपै न जपावै, अपने से आवै।

यह अपने से है। सब अपने में है। दुनिया का मालिक बैठा है, लेकिन कब होता है– जब फोर्स बनता है, प्रेशर बनता है, तब जाकर के मिलता है मालिक।

मन एक गम्भीर यंत्र है। इतना सुन्दर यंत्र है। कितना महत्वपूर्ण यंत्र है। किसी ने पूछा कबीर से–

कौन ज्ञान है, कौन ध्यान है, कौन है पारखबानी।

कौन लिए तुम ज्ञान कुटत हौ, को है अंतर्यामी।।

तो उन्होंने जवाब दिया–

मनै ज्ञान है, मनै ध्यान है, मन है पारखबानी।

मनै लिए हम ज्ञान कुट्त हैं, मनुवै अंतर्यामी।।

तो जब हम नीचे रहते हैं सबसे, तब भी मन बता देता है कि तुम यहाँ हो। और जब हम ईश्वर को प्राप्त कर लेते हैं, तब भी यह मन ही बताएगा, कि अब तुम ठीक हो।

तो यह पश्यंती का जाप जो है–मन को खड़ा कर देता है। श्वासा ऊपर जाती है–नीचे जाती है। बस इसको देखते रहो–पश्यंती का मतलब यही है। पश्य नाम देखने का है। और बस देखते देखते हमें लक्ष्य तक पहुँचा दे। जहाँ हमें पहुँचना था वहाँ हम पहुँच जायें। और हमारा ट्रांसफार्म हो जाय, रूपांतर हो जाय। और हम पश्यंती से परा में बदल जायें। परा आटोमैटिक होती है। पश्यंती में देखना पड़ता है, समझना पड़ता है, सहारा देना पड़ता है और उसमें देखने की भी ज़रूरत नहीं है। कुछ भी करो न करो जाप होता रहता है– उसको कहते हैं– परा, अजपा। तो यह अजपा आएगा कब? कि पश्यंती वाणी का कर्जा चुकेगा तब। हमने कितना कर्जा किसका खा रखा है। बैखरी मध्यमा से करना पड़ेगा। उसी के साथ साथ मेडीटेशन भी चलेगा। उसी के साथ साथ जप भी चलेगा। उसी के साथ–साथ प्रार्थना भी चलेगी, उसी के साथ–साथ क्षमा याचना भी चलेगी। तो साधक चहुंमुखी प्रगति जब करता है, तब चहुंमुखी साधना भी चलती है। चित्त चिन्तवन करता है, मन संकल्प करता है, बुद्धि निश्चय करती है कि ऐसा करो और अहंकार ठोक लगाता रहता है कि हाँ ऐसा ही है। जब ये चारों अन्तःकरण बेइमानी में लगे रहते हैं तो इनको सुलझाना है, इनको ठीक करना पड़ेगा। उसी का नाम साधना है। तो ये मूलतः चार प्रकार की वाणियां होती हैं– बैखरी, मध्यमा, पश्यंती और परा।

तीन वाणियों का जप अपने से किया जाता है, तब होता है। साधक स्वयं करता है। और जो परावाणी का जप है अजपा, वह अपने आप होता है–आटोमैटिक। वह किया नहीं जाता। वह तो तुम सोते हुए कर रहे हो। जब तक तुम्हारी श्वासा चलती है, तब तक जाप हो रहा है–कंटीन्यू (लगातार) । ऐसी कंडीशन अंतर्जगत में एडजस्ट हो जाती है और अंतर्जगत से उसकी पुष्टि हो जाती है, कम्युनिकेशन हो जाता है, उसमें मोहर लग जाती है, कि आज से तुम कन्टीन्यू हो गए। तुम परमानेन्ट (स्थायी) हो गए। अब डाक्टरेट मिल गई तुम्हें। जब ऐसा हो जाता है, तब फिर वह अन्तर्जगत से उसी लेबल में आ जाता है।

भगवान से प्रार्थना करते–करते, कि हे भगवान मुझे लेबल पर ले लो। मुझे निकाल लो इस जाल से, जो मैं काम के क्रोध के लोभ के मोह के चक्कर में फंस

गया हूँ। इनको मार कर मुझे अपने संरक्षण में ले लो। चिल्लाते रहो, इसी का नाम भजन है, इसी का नाम प्रार्थना है, इसी का नाम मेडीटेशन है, इसी का नाम साधना है। यही भजन है। इसे करना पड़ेगा। और फिर करते करते भगवान जो है, जिसके ऊपर ही सब दारोमदार है। हम अपने को, अपने भजन को, अपनी प्रार्थना को, अपने मेडीटेशन को, अपनी साधना को, अपने अजपा जाप को जिसे देना चाहते हैं। वह जब कह दे, कि ठीक है, तुम इसे ले लो। बस, फिर ठीक हो गया। अब तुम ठीक हो, अब तुमको कोई दिक्कत नहीं होगी–जहाँ उसने कह दिया, तो फिर अजपा जाप शुरू हो जाएगा–होने लगेगा। फिर अनवरत हो जायेगा, आटोमैटिक हो जायेगा। फिर यह साधक, बालक बन जायेगा फिर वह निर्भय हो जाता है। फिर उसे कोई चिन्ता नहीं रहती। वह अपने में मस्त रहता है। फिर उसे नशा बना रहता है। उसी नशे में मस्त घूमता रहता है। ऐसे ढंग से। पश्यंती में देखना होता है। पश्यंती वाणी का नाम ही देखना है–पश्यंती। इसमें नाम को देखना। लेकिन अजपा जो है– इनके नाम लेने से अजपा के बताने की शैली बन जाती है। अजपा बहुत उच्च कोटि की बात है–साधारण नहीं है। साधारण साधक इसे नहीं कर सकता। अजपा उसको मिलती है, जो अन्तर्जगत फकीरी पार्लियामेंट में एडमिट हो गया है। वो बड़े उच्च कोटि के साधक होते हैं। तो

नाम रूप दुइ ईश उपाधी।

नाम का जप और रूप का ध्यान इन्हीं से ईश्वर पकड़ में आता है। इन्हीं को मुख्य साधन माना गया है। इसलिए साधकों को खूब जप करना चाहिए, खूब ध्यान करना चाहिए। अपने ध्येय को हृदय में बैठा लो और मन से देखो। ध्येय वह है जिसका हम ध्यान करते हैं। वह देवी देवता, माता पिता, गुरु कोई भी हो सकता है, जिसे तुम सबसे ज्यादा प्रेम कर सकते हो। ध्येय को हृदय में देखो। अगर ऐसे नहीं बनता तो फोटो ले लो, उसे देखते रहो। फिर आंख बन्दकर लो तो वह चित्र दिखायी देने लगेगा। तो ध्येय तुम्हारा इष्ट हो गया, ध्याता तुम्हारा मन हो गया, ध्यान यह क्रिया। तीनों की त्रिपुटी बन जाय, तीनो समाहित हो जायें। ध्यान करते करते समाधि लग जाय, हम आकाशवत हो जायें। चाहे एक दिन में हो जाय, चाहे साल दो साल लग जायें, चाहे हजार जनम लग जायं, यह तुम्हारी गति पर निर्भर करेगा। जैसी गति होगी उसी के अनुसार समय लगेगा। जब ऐसा हो जायगा तो श्वासा खड़ी हो जायगी। जहां श्वासा खड़ी हुई कि हम मुक्त हो जायेंगे। जन्म जन्म के कर्म जाल से मुक्ति मिल जायगी। ज्ञान की गरमी से ये सब जलकर खाक हो जायेंगे। यह भगवान के प्रादुर्भाव का समय होता है।

जब यह अवस्था समाधि की मिल गयी तो फिर समत्व में आ गये। एकरसता आ गयी। जाग्रतअवस्था के सब कार्य होते रहते हैं और हम उसी नशे में चूर रहते हैं। यह नशा रूपी परमात्मा जब छा गया दिल दिमाग में, तो फिर नहीं उतरता। ये नशा भजन से मिलता है, ध्यान से मिलता है। कभी कोई भगवान का प्रेमी इस नशे को प्राप्त करता है, और फिर उसी में चूर रहता है।

कहे मंसूर मस्ताना। ये हक दिल से मैने पहचाना।।

वही मस्तों का मयखाना। उसी के बीच आता जा।।

यह बात उस मियां की नहीं है। यह तो जब हमारा मन शूर हो जाय। काम, क्रोध आदि को मारने की क्षमता आ जाय, तब यह मन शूरवीर बनता है। उसी को मंसूर कहते हैं। वह मन कहता है कि अब मैंनें अपने ध्येय को पहचान लिया है। अगर वह ईश्वर रूपी नशा पाना है,तो उस ध्यान रूपी मय खाना में आओ। यह नशा मिल गया तो मन उसी में मस्त हो जाता है।

मन मस्त हुआ फिर क्या बोले।

हीरा पाया गांठ गठियाया, बार बार फिर क्या खोले।।

खुद को उसी में समाहित कर देता है। फिर वह रहते हुए भी नहीं रह जाता। इसलिए यह बातों का मजा कोई मजा नहीं है, मजा तो तब है जब उस ईश्वरीय नशा के घोड़े में सवार हो जाओ।

उस अवस्था को ऐसे बताने में ठीक नहीं आता, क्योंकि यह स्वयं क्रिया करके पाने की बात है। हाँ ऐसे हम बता देते हैं कि ध्यान करते करते उसे बारीक करते चलो। जैसे अपने इष्ट को देखते हो, फिर चरण देखो, चरण में एक तिल को देखो, उसे छोटा करते जाओ और बाल की नोक के बराबर करके सुरति को उसी में जमा दो। हटने न पाए वहाँ से। बाकी का सारा दृश्य विलीन हो जाय। सुरति उसी बिन्दु पर लीन हो जाय। तल्लीनता आ जायगी जब उसमें, तो ध्यान की स्थिति बनती है। नींद सी आ जायगी, झटके आ सकते हैं। जहां बैठे हैं वहां से दूर जा गिरेंगे, ऐसे भी झटके आ सकते हैं। यह जब होने लगे तब समझो ध्यान ठीक लग रहा है। ईश्वर पाजिटिव है, मन संसारी निगेटिव है। तो जब दोनों मिलेंगे तो इस्पार्किंग होगी। जब ऐसा होगा तो समझ लो कि इस करेंट से अब हम मर जायेंगे संसार की तरफ से। और जीवित बने रहेगें। ईश्वर के यहां पैदाइश हो जायगी। तो कोशिश यह होना चाहिए कि हम इतनी मेहनत करें मेडिटेशन में कि हम वहां पैदा हो जायं ईश्वर में। और यहां माया में मुर्दा हो जायं।

ध्यान की गहरी स्थिति में झटके आते हैं,इससे डरना नहीं चाहिए। जब हम यहां धारकुण्डी में आये थे शुरू में, तो यहां पीपल के पास ऐसा चबूतरा नहीं था। ऐसे ही थोडी पत्थर मिट्टी थी। यहीं धूनी पर आसन लगाकर हम ध्यान करते रहे। न जाने कैसे अचानक उचक कर धारा में जा गिरे। पता नहीं किसने फेक दिया। अब वहां कोई भूत तो बैठा नहीं था फेकने वाला, यह तो अपने में ही पाजिटिव और निगेटिव का जब मिलन होता है तब झटके आते हैं। फिर जहां यह दोनों जुडे तो सारा संचित जल जायेगा। श्वांसा खड़ी हो जायगी। फिर दुनिया बदल गयी। यह मन गŕड़ बन जायेगा, जो पहले सर्प था। इन्द्रियां ऋद्धि सिद्धि बन जायेंगी, जो पहले विषयणीं थीं। सब कुछ बदल जायेगा।

तो यह है मूल चीज, जो करने की है। बातों में समझने से कुछ होता नहीं है, जब तक क्रिया में न आ जाय। मन को खड़ा करना पड़ेगा। मन को रोकना बहुत जरूरी बात है। और यह जो हम बताते हैं, इससे क्रिया करने में कुछ सहूलियत मिल सकती है। मन में जो फिजूल की बातें आती रहती हैं, वे हट जाती हैं और उसमें एक घेराव आ जाता है। अगर बाहर स्थूल जगत की, अधिदैव जगत की, अध्यात्म जगत की शंकाये रह जायं तो फिर तुम नहीं कर पाओगे। इस बाहरी सतसंग से बुद्धि निरालम्ब निर्लेप होकर, सिमट कर एक जगह पर आ जाती है। तब इस मन को रोकने का उपाय होता है। और मन जब रुक जायेगा तो गरुड़ बन जायेगा। भगवान का वाहन बन जायेगा। आत्मारूपी अमृत ले आयेगा। इस तरह से मन को खड़ा होना चाहिए, इसकी दौड़ बन्द होना चाहिए, यही मुख्य है। इसी के लिए जप ध्यान सब किया जाता है।

जब साधक ने खूब जाप किया, पश्यंती वाणी से, परावणी से, और ध्यान सही आ गया। तो बस नाम, रूप, और फिर लीला का नम्बर आ गया। कृष्ण ने लीला की है, रहस किया है। लीला रहस्य। रहस्य का मतलब होता है कि जैसे तुम चले जा रहे हो, दो आदमी बात कर रहे हों। तो कहेंगे, क्या रहस्य है भाई? क्या कोई ऐसा (गोपनीय) प्रसंग है क्या? जो बताने लायक नहीं है–वही रहस्य है। माने अनुभव, अनुभूतियाँ वो भगवान देते हैं। और हमेशा एक र की धारा–राधा और गो नाम इंद्रियाँ–गोपियाँ इनके बीच में रहते हैं। गो नाम इंद्रियां गोपियाँ हैं, और नाम की धारा, राधा है। इन्हीं से प्रेम करते हैं। लोग कहते हैं, द्वारका क्यों नहीं ले गये राधा को, जब उनकी पत्नी थी–पत्नी थोड़े थी। पत्नी तो वो थीं जो बाद में प्राप्त की थीं। ये तो प्रेमिका है। यह तो मथुरा मंडल में ही (ब्रज में ही) रह गई यहीं। हृदय

में। वह श्वासा यहीं चलती है। फिर श्वासा से परे जब साधना हो जायेगी, तो यह बुझेगी नहीं।

रुक्मिणी का मतलब यह है कि यह श्वासा ऊपर नीचे जपते जपते रा-म, रा-म यह रुक जाय। तो झट इसका ट्रांसफार्म होकर मणि बन गयी। रुक्मिणी बन गयी। तो यह सबसे बड़ी क्षमता है। इससे कोई नहीं जीत सकता, यह सबको हरा देगी, और कृष्ण को अपने में मिला लेगी। और जामवंती खाली जानना है। ऐसी आठ पटरानियां हैं। और आठों में मुख्य है रुक्मिणी। ये जो श्वासा रुक जाय, जिस साधक की, जपते जपते जपते जपते। तो जहाँ वो रुकी, तो मणि बन गई। भक्ति-मणि। इस तरीके से जो भक्ति करते हैं। नारद इसके साक्षी है। नारद कहते हैं, आकाश को। आकाश इसे देख रहा है। तो भगवान से कम्यूनिकेशन कर देता है। बता देता है कि यह सही है। और इसको डिग्री दे दीजिए, और इसको जिताइए। और यह जो जामवंती है, यह जामवंत की बिटिया है। यह जानकारी से निकली है-थ्योरिटिकल है। यह रुक्मिणी जो प्रैक्टिकल है, उसको लेबल नहीं कर सकती। ये जो आठ पटरानियाँ हैं- अष्टसिद्धि के रूप में हैं। ये सब सिद्धियाँ आती हैं। तो कृष्ण के पास आठ पटरानियां। सोलह हजार एक सौ तो पूरे शरीर की नाड़ियाँ, और ये आठ-अष्ट सिद्धियाँ। राधा-कृष्ण की जो ताकत है। यह तो स्थूल जगत का जब साधन रहता है। अजपा करता रहता है। उस वाणी में पागल रहता है। उसमें लगन हो जाती है। तो यह जो रा की धारा है श्वासा में यह राधा है। और यह बरसाने से मिलती है। बरसाना कहते हैं। कंठकूप से जब अमृत मिलने लग जाता है, तो यह बरसाना है। उसमें जो ताकत मिलती है, यह राधा है। यह मथुरा (मंडल) छोड़ कर नहीं जाती है। यह द्वारका नहीं जा सकती है। यह वहीं रहेगी।मिलन नहीं हो सकता, यह शुरू की साधना है। और शुरू की साधना जब चलती है, तो श्वासा का जाप होते-होते इसमें बड़ा भारी प्रेम हो जाता है। वह मस्ती अलग ही रहती है। वह साधना का आवेश अलग ही रहता है। वह आनंद। यह पागल बैठी रह जाती हैं, गोपिकाएं और राधा। और वह जाकर दिल में चला जाता है-द्वारका में। प्रोग्रेस कर जाता है। तो फिर वहाँ दूसरी चीजें मिलती हैं। फिर इनका ट्रान्सफार्म होकर अष्टधामूल प्रकृति अष्टिसिद्धि बन जाती है। वह सिद्ध कोटि का साधक बन जाता है। तो इसलिए वह धाम कहलाता है, द्वारका। और जो धाम को प्राप्त कर लेता है, वह मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार इनको जीत लेता है। नाम, रुप, लीला और धाम को प्राप्त कर लेता है फिर परिणाम मिल जाते हैं, उसको, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष फिर

काल, कर्म, स्वभाव, गुण इनको खतम कर देता है। ऐसा जो साधक होता है, वह सही गति को प्राप्त कर लेता है।

इस तरीके से, बहुत गम्भीर बातें हैं। और अगर हमें स्थूल साधना ही करनी है, ज़िंदगी भर। अगर प्राइमरी और हाईस्कूल ही पढ़ते रहना है, लड़के को ज़िंदगी भर, तो वह मास्टर आफ आर्ट और मास्टर आफ साइंस नहीं हो सकता। तो पहले यह साधना स्थूल में चलती है। और फिर सूक्ष्म में चलती है। और जब सूक्ष्म की चलेगी तो उसमें दूसरी बातें आती हैं। इन सब क्रियाओं की एडजस्टिंग होनी चाहिए। निगेटिव, पाजिटिव जुड़ गए, फिर हो गया। फिर उसकी वाणी, उसका तरीका, उसकी चमक, उसकी योग्यताएं सब दिव्य हो जाती हैं। ऐसा नहीं कि उसमें कमजोरी आ जाय, पुरानापन आ जाय, दिक्कत आ जाय, ऐसा कुछ नहीं। वह एक ऐसी चीज़ है–अलौकिक। इस तरीके से जो गाइड है वह उचित तरीके से उसका प्रच्छालन करता है। उसमें जो लिपटी हुई हैं गलतियाँ, जो घूम–घूम कर उसकी इनर्जी को वेस्ट करती हैं, उनको दूर करता है। उनको निकालना पड़ता है। जो सही हैं, उनको आगे बढ़ाना पड़ता है। इसलिए साधक की ताकत नहीं है कि वह अपने आप करे। इसको गाइड कराता है। गुरु कराते हैं। और ये गुरु भी कोई–कोई होते हैं, जो इसको समझ पाते हैं। सबकी समझ में नहीं आता। क्योंकि यह इतना गम्भीर विषय होता है कि, इस गम्भीर विषय के लिये जन्म–जन्म तक मेहनत करनी पड़ती है, तब समझ में आता है।

शरीर एक स्थूल है, एक सूक्ष्म है, एक कारण है। ये तीन शरीर होते हैं। तीनों महत्वपूर्ण हैं। कभी कभी साधकों को ऐसा स्वप्न आता है कि हम कहीं जा रहे हैं और मर गये हैं। फिर आगे जा रहे हैं फिर आता है कि हमें किसी ने मार डाला। तीन तीन जगह मरना देखता है फिर भी अपने को पाता है कि मैं ज़िन्दा हूँ। इसका अर्थ यह हुआ कि वह मर नहीं गया, उसको ज्ञान ने मार दिया है। तो उसका अर्थ यह होता है कि आगे चलकर वह साधक निश्चित साधना के द्वारा शरीरों के भेदों को प्राप्त करके आगे बढ़ सकता है।

इस तरह से यह आदान–प्रदान हमारे से हो रहा है। पराये से थोड़े हो रहा है। इसलिए हम इच्छा रहित होकर अनपेक्ष होकर साधना करें। केवल भगवान के लिये, कल्याणार्थ, समर्पणार्थ और हम कुछ नहीं चाहते। भगवान! आपसे हम कुछ लेना नहीं चाहते। और कुछ नहीं करना चाहते, हम तो अपने मन और अन्तःकरण को शरीर को आपके हांथों में सौंपना चाहते हैं। हम तो आपकी शरण में समर्पित होना चाहते हैं।

अब आप हमको तौर तरीका युक्ति बताइये, कि हम आपको समर्पित हो जायं। हम नहींजानते, आप बताइये। अपने इष्ट से पूछो। वो बताएंगे और फिर कैसे बैठें, कैसे बोलें? बोलने की शैली, तरीका, उठना, बैठना, ये सब बहुत बड़ी बात है। तो इस तरीके से तू दे, तू दे। ऐसे इष्ट निर्भरता आ जाय और वह अनुकूल हो जायं, तो फिर हमें कोई दिक्कत नहीं रह जायगी। कहावत बनी है कि गुरु मेहरबान तो चेला पहलवान।

साधक का मुख्य लक्ष्य यही होना चाहिए। कि नाम में लगे रहें। बैखरी वाणी, मध्यमा वाणी या पश्यंती वाणी या परा वाणी, जिसके हम अधिकारी हैं, उसमें। साधना हमारी, किस स्तर में पहुंच गई है। वह किस वाणी की मांग कर रही है, उस वाणी का, हमको जाप करना चाहिए। जिस वाणी का हम जाप करें- (जैसे पश्यंती) तो फिर ध्यान भी उसी स्तर का करना चाहिए। रूप का ध्यान बाहर भी हो सकता है, हृदय में भी हो सकता है। वाणी के हिसाब से रूप का ध्यान हो सकता है। इसी प्रकार लीला चार प्रकार की होती है। एक तो स्थूल सुरा संबंधी है। बैखरी वाणी से लेबल करेगा, फिर सूक्ष्म सुरा संबंधित अनुभव है-मध्यमा वाणी से लेबल करेगा। फिर जो सुषुप्ति सुरा संबंधित अनुभव है-वह पश्यंती वाणी को लेबल करेगा। फिर परा वाणी है-परावाणी का सम सुरा संबंधी अनुभव। इस प्रकार से चार तरह की लीला भी होती है। लीला वह कही जाती है, जो भगवान के, और साधक के बीच में क्रियाएं होती हैं। आदान-प्रदान होता है। कम्युनिकेशन होता है। जो हम लगन लगाए हुए हैं-भगवान के लिए, भगवान हमें अपनी शैली से हमारी साधना की योग्यता के अनुसार हमें सूचित करता रहता है। हमको सजग करता है, हमको बताता है, हमको गाइड करता है। वह संकेत के-अनुभव के-रूप में लिया जा सकता है। लीला के रूप में लिया जा सकता है। या रहस्य (रास) के रूप में लिया जा सकता है। भगवान क्या रहस्य कर रहे हैं। ये सब एक्सपीरियंसेज़ (अनुभूतियां) हैं। इसे कहते हैं अनुभव-जो ऐसे समझ में नहीं आता है। एक्सपीरियंसेज़, अनुभूतियाँ। भगवान कृष्ण ने रहस्य (रास) किया था। क्या, रहस्य किया था? गोपियों के साथ में रहस्य किया था। तो, ये जो दस-पांच इंद्रियाँ है, और आत्मा कृष्ण है। यह साधक के अंतर्जगत की लीला है। यह रहस्य किया था। विरज में रहस्य किया था। जब साधक वीर्य और रज से विरत हो जाय अर्थात् स्त्री पुरुष के संयोग रूप स्थूल देहभाव से अलग हो जाय, आकाशवत, तब यह रहस्य होता है। साधक के और भगवान के बीच में जो अनुभूतियाँ होती हैं, एक्सीपीरियंसेज़ होते हैं और कम्युनिकेशन होते हैं, उन्हें वही

समझाते हैं। और वही बता सकते हैं। उनके बीच में जो विशेष बातें होती हैं–उनको लीला कहते हैं, रहस्य कहते हैं।

इस तरह से गुरु कृपा मिल जाय तो साधक को अपने ही अन्दर से मार्ग दर्शन मिलने लगता है। जैसे सोने में स्वप्न दिखाई पड़ता है। साधक जो जाग्रत में हरकत करता है, जैसे विचार लाता है, जैसा भजन करता है, जैसा व्यवहार करता है, जैसे बैठता है, जो भी सोचता है, जो भी चाहता है। इच्छा करता है, किसी चीज़ को देखकर लालच करता है। यही सब संस्कार–यह जो कंठकूप है, इसमें दाहिने तरफ, कछुए के आकार की एक नाड़ी होती है, बहुत बारीक–उसी में, ये सब जमा होते जाते हैं। खास–खास जो हैं, उनके रिफ्लेक्शन, वो सब इसी नाड़ी में, जमा होते जाते हैं। और उनकी एक रील बन जाती है। और जहाँ हम सोए, तो वह रील–स्वप्न के रूप में आ जाती है–अनेक प्रकार के चित्र दिखाई पड़ते हैं। ये हमने पहले बनाए हैं। जो संकल्प किए गए, उनके संस्कार बन जाते हैं। वे ही स्वप्न में दिखाईपड़ते हैं। स्वप्न चार–पांच किस्म के होते हैं। कुछ स्वप्न हल्के किस्म के होते हैं, जिनका कोई मतलब नहीं होता। कुछ स्वप्न ऐसे होते हैं, जो मतलब रखते हैं। जो हमने संकल्प किये थे, उनका चित्रण हुआ, रिएक्शन हुआ। कुछ सही, कुछ गलत। जैसे हमने संकल्प किया, कि हमें ये चीज़ मिल जाय। हम वहाँ चले जायें। यह आदमी ठीक है। तो बस स्वप्न में दिखेगा कि एक आदमी वैसा ही हमें कोई चीज़ दे रहा है। फिर वहॉ ले जा रहा है। ऐसे–ऐसे चित्र बनेंगे। बहुत स्पष्ट नहीं होंगे। समझ में नहीं आएगा। तीसरे किस्म का स्वप्न हो गया। चौथी प्रकार के स्वप्न वे हैं, कि जो हमने देखा वही घटित हो जाय। जैसे किसी ने सपने में देखा कि मेरी माता बीमार हो गयी है–और वास्तव में बीमार हो जाय। और पांचवे किस्म के जो स्वप्न हैं। वह साधक को होते हैं। अच्छे कोटि का जो साधक है–वह जो सोचेगा वह बातें स्वप्न में आएंगी। और उसको साधना के विषय में दिखाई देंगे–बाहरी बातों में नहीं। हमारी कितनी प्रगति हो रही है। कहाँ क्या है? गुरु मुझे कहां कृपा भेज रहा है। अनेक बातें हैं।

दूसरा अंग फड़कन से भगवान बताते हैं। तीसरा ऐसे (प्रत्यक्ष) बताते हैं। चौथा सार्वभौमिक बताते हैं–पेड़ बता देगा। देवता बता देगा, कोई बता देगा। हर कहीं से बता देते हैं। ऐसे चार–पांच किस्म की अनुभूतियां होती हैं–यह सब ईश्वरीय लीला है। यह सेल्फरियलाइजेशन है। यह जब आने लगता है साधक को, तो साधक राइज करने लगता है। यह बोध कराने के लिए ही, परमात्मा भेजता है। यह जो भरभटा रहा है–इसकी समझ काम नहीं कर रही है। कभी भागता है, खाने के चक्कर में।

कभी भागता है, विषय के चक्कर में। और जब मन इधर से हट कर भजन में लग जाता है। भगवान और माया दोनों का रहस्य समझ में आ जाता है। उसी लीला से, अनुभूतियों से अनुभव से। जब रहस्य समझ में आता है, तो बोध हो जाता है– वही धाम बन जाता है। फिर उसे किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं है। वह सब जान जाता है। बोध हो जाता है। धाम हो जाता है। नाम, रूप, लीला की अनुभूतियों से–जब टटिया की आड़ से–बोध करा दिया, तो धाम मिल गया। भगवान वहाँ बैठे हैं। फिर धाम में क्या होता है। भगवान रहते हैं। यह है धाम।

काल कर्म स्वभाव और गुण इनको खतम करना है। केवल एक ही तरीका है। विज्ञान इसमें कुछ नहीं कर सकता। विज्ञान तो केवल सोच लाता है। जब हम कहते हैं कि एक लाख 86 हजार मील प्रति सेकेण्ड प्रकाश की गति है। तो यह जो समय है, काल जिसको कहते हैं, इतनी गति आने पर, यह अपने आप ही खड़ा हो जायगा। वह बढ़ेगी, तो यह घटेगा। इसका कोई महत्व ही न रह जायगा, उसके सामने। इस तरीके से यह विज्ञान का विषय नहीं है–केवल अध्यात्म का विषय है। खाली नाम के द्वारा हम श्वासा को खड़ा कर दें, जो हम पहले से कहते चले आ रहे हैं। और जब श्वासा खड़ी हो जायगी, तो वह दुनिया स्तम्भ हो जायगी, जैसे आकाश। शून्य। इसमें कोई हरकत नहीं है। शून्य खड़ा हुआ है। काल की गति तो है ही नहीं। हम अपनी गति को, मन की गति को रोक देंगे, तो काल, शून्य हो जायेगा। हम बार–बार यही कहते हैं। ध्येय और ध्याता और ध्यान। ज्ञेय और ज्ञाता और ज्ञान। ज्ञेय है–इष्टदेव, ईश्वर और ज्ञाता है–हमारा मन। और ज्ञान, जो न्यूट्रल (असंग) है। जो हम देखते हैं–यह प्वाइंट (बिंदु) है। इसमें हमारा मन रुकना चाहता है। इसकी जानकारी, यह ज्ञान है। 'त्रयमेकत्र संयमः।' ये तीनों एक हो जायं। न ज्ञान रह जाय, न ज्ञेय रह जाय, न ज्ञाता रह जाय। तब ध्यान की स्थिति बनती है और जब आकाशवत हो गये और उसीमें बने रह गये तो समाधि।

"तत्प्रत्ययैकतानता ध्यानम्। तदेवार्थमात्र निर्भास स्वरूपशून्यमिव समाधिः।"

तो समाधि का रूप बन गया। समत्व में आ गये। बस काल, कर्म, सुभाव, गुण न रह पाएंगे। जीवन मुक्त हो गया। स्थिति मिल गयी। धाम मिल गया। अब उस अवस्था का बयान नहीं हो सकता।

बूंद समानी समंद में, अब कछु कहा न जाय।

तो कहने में नही आता, अनुभूति का विषय है। वह तो, सोइ जानै जो पावै।

हरिः ओम